कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 03 भाग 07, (दिसंबर, 2023)
पृष्ठ संख्या 60–61

परंपरागत तिलहनों का वैकल्पिक स्रोत हैः पाम ऑयल

डॉ. रूद्र प्रताप सिंह[1] एवं डॉ. अभिनव कुमार[2]
[1]प्रोफेसर, कीट विज्ञान विभाग, कृषि विज्ञान संकाय,
भगवंत विश्वविद्यालय, अजमेर, राजस्थान
एवं [2]सहायक प्राध्यापक
फैकल्टी ऑफ एग्रीकल्चर,
श्री खुशाल दास विश्वविधालय, हनुमानगढ़, राजस्थान, भारत।
Email Id: rudra.agento@gmail.com

ताड़ (*एलाएइस गुइनेन्सिस*), पाम ऑयल वनस्पति तेल है। दुनिया में इसका व्यापक पैमाने पर इस्तेमाल हो रहा है। पाम तेल का इस्तेमाल खाद्य तेल की तरह होता है। इसके अलावा कई उद्योगों में इसका इस्तेमाल होता है। नहाने वाला साबुन बनाने में भी पाम तेल का बड़े पैमाने पर इस्तेमाल होता है। पाम तेल ताड़ के पेड़ के बीजों से निकाला जाता है। इसमें कोई महक नहीं होती. जिसकी वजह से हर तरह का खाना बनाने में इसका इस्तेमाल किया जाता है। पाम तेल उत्पादन में इंडोनीशिया दुनिया में नंबर एक पर है। दूसरे नंबर पर है मलेशिया है। कुछ अफ्रीकी देशों में भी इसका उत्पादन होता है। खाने वाले तेलों के मामले में भारत के आयात का दो तिहाई हिस्सा केवल पाम ऑयल का है।

ये लाल या नारंगी रंग का होता है। इसकी दो किस्में हैं अमेरिकन ताड़ का तेल और अफ्रीकी ताड़ का तेल। ताड़ के तेल में बीटा कैरोटिन का उच्च स्तर पाया जाता है। इसमें संतृप्त वसा की मात्रा काफी कम होती है। इससे एलडीएल कोलेस्ट्राल को बढ़ाने में मदद मिलती है जिससे कि ह्रदय के विकारों को रोकने में मदद मिलती है। ट्रांस वसा की उपस्थिति के कारण लोग अब इसे अपने आहार में इस्तेमाल करने लगे हैं. यह बहुत ऊंचे तापमान पर पिघलता है। इसमें सैचुरेटेड फैट बहुत अधिक होता है। यही वजह है कि इससे मुंह में पिघल जाने वाली क्रीम और टॉफी–चॉकलेट बनाये जाते हैं।

भारत में पाम ऑयल की खपत बड़े पैमाने पर होती है। इस तरह देश में हर साल अरबों रुपये का पाम ऑयल आयात होता आयात पर आने वाले खर्च से निजात पाने के लिए भारत सरकार, देश में ही बड़े पैमाने पर ताड़ की खेती कराने का प्रयास कर रही है। केंद्रीय कृषि मंत्री के अनुसार भारत सरकार का पूर्वोत्तर राज्यों में ताड़ की खेती को बढ़ावा देने पर खासा जोर है। यहां तक कि सरकार ने इस खेती के विस्तार के लिए फंडिंग के तरीके में भी बड़ा बदलाव कर दिया।

जलवायु की आवश्यकता

पाम ऑयल एक आर्द्र उष्णकटिबंधीय फसल है और उन क्षेत्रों में सबसे अच्छी तरह से उगती है। जहां

तापमान 22°C से 33°C के बीच होता है। इसके बेहतर विकास के लिए प्रतिदिन कम से कम 5 से 6 घंटे तेज धूप और 80% आर्द्रता एवं 2000 – 4000 मिमी हर महीने वर्षा की आवश्यकता होती है।

मिट्टी की आवश्यकता

पाम ऑयल विभिन्न प्रकार की मिट्टी में उगाया जा सकता है, लेकिन यह अच्छी तरह से सुखी गहरी दोमट और कार्बनिक पदार्थों से भरपूर जलोढ़ मिट्टी में सबसे अच्छा उगती हैं। इन पेड़ों को लगाने के लिए कम से कम 1 मीटर मिट्टी की गहराई की आवश्यकता होती है।

भारत में पाम ऑयल की किस्में

टेनेरा: यह पाम की बहुत आम किस्म है जो पतली खोल वाली होती है और दुनिया भर में इसकी खेती की जाती है।

ड्यूरा: इस किस्म की खेती व्यावसायिक रूप से नहीं की जाती है और इसका खोल 2 से 8 मिमी तक मोटा होता है।

पिसिफेरा: यह पाम की एक ऐसी किस्म है जो खोल रहित फल देती है।

पाम ऑयल की खेती

पाम ऑयल की खेती मुख्य रूप से बीज द्वारा होती है– बीजों की उच्च सुप्तता के कारण उन्हें 40°C तापमान पर 75 दिनों के लिए प्री–हीटिंग की आवश्यकता होती है। इसके बाद बीजों को बहते पानी में भिगोकर 4–5 दिनों के लिए ठंडा होने के लिए रख देना चाहिए। 10 से 12 दिन में बीज अंकुरित होने लगते हैं और अंकुरित हो जाने के बाद बो देना चाहिए।

पाम ऑयल की खेती हेतु भूमि की तैयारी, दूरी और रोपण

पाम ऑयल की खेती के लिए भूमि को खरपतवार मुक्त बनाया जाना चाहिए और मिट्टी को अच्छी तरह से भुरभुरी बनाने के लिए दो बार जुताई करनी चाहिए। मिट्टी को समृद्ध क्षेत्र बनाने के लिए खेत को अच्छे कार्बनिक पदार्थों के साथ पूरक करें। ताड़ के तेल की रोपाई के लिए सबसे अच्छा मौसम जून से दिसंबर तक होता है। त्रिकोणीय रोपण विधि के मुताबिक इसको 9 मीटर x 9 मीटर x 9 मीटर की दूरी के साथ लगाना चाहिए। साथ ही 1 हेक्टेयर भूमि में 143 से 145 ताड़ के पौधे लगाए जा सकते हैं। रोपण गड्ढों में 60 सेमी x 60 सेमी x 60 सेमी के आकार के साथ किया जाना चाहिए।

कीट और रोग

ताड़ की खेती में पाए जाने वाले सामान्य कीट और रोगों में पेस्टलोटिप्सिस लीफ स्पॉट, गैनोडर्मा बट रोट, बैक्टीरियल बड रोट, ऑयल पाम विल्ट, गैंडा बीटल और मीली बग शामिल है।

पाम ऑयल की कटाई

इसके खेत में पौधरोपण के बाद 5 से 3 साल में ताड़ का पेड़ कटाई के लिए तैयार हो जाता है। पाम ऑयल की कटाई का समय निर्धारित करना बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह तेल की गुणवत्ता और मात्रा को बहुत प्रभावित करता है। कटाई तब की जा सकती है जब फल पीले–नारंगी रंग के हो जाएं और 5 से 8 फल अपने आप गिर जाएं। इसके अलावा फलों को उंगली से जोर से दबाने पर ताड़ के फलों से नारंगी रंग का तेल निकल जाए तो समझ लीजिये यह कटाई के लिए तैयार है। कटाई साल भर होती है और आम तौर पर तेज चाकू या दरांती की मदद से 10 से 14 दिनों के अंतराल में की जाती है।

भारत में ताड़ की खेती

भारत में प्रमुख पाम तेल उत्पादन राज्यों में आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, असम, केरल, गुजरात, गोवा, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, त्रिपुरा, पश्चिम बंगाल और अंडमान शामिल है।